JETIR.ORG ISSN: 2349-5162 | ESTD Year : 2014 | Monthly Issue

JOURNAL OF EMERGING TECHNOLOGIES AND INNOVATIVE RESEARCH (JETIR)

An International Scholarly Open Access, Peer-reviewed, Refereed Journal

समलैंगिकता, समाज और भारतीय हिंदी सिनेमा

डॉक्टर कृष्ण कुमार, सहायक प्राध्यापक, पत्रकारिता एवं
जनसंचार विभाग चौधरी देवीलाल विश्वविद्यालय, सिरसा

Email-krishjmc007@gmail.com

Contact No-8199990007

सारांश

बीसवीं सदी में मानव जाति को सिनेमा के रूप में एक महत्वपूर्ण वैज्ञानिक उपहार मिला । सिनेमा ने विश्व के मनोरंजन के परिदृश्य में एक क्रांति ला दी । इससे पूर्व मानव समाज अपना मनोरंजन अलग–अलग माध्यमों से करता रहा है जिसमें नाटक नौटंकी व विभिन्न अवसरों पर लगने वाले मेले व अन्य कई पारंपरिक लोक माध्यम होते थे । यदि भारत मे सिनेमा के आगमन की बात करें तो अंग्रेजों के शासनकाल के दौरान फिल्में बनाने का सिलसिला प्रारंभ हुआ । शुरू में फिल्मों के पास संवाद नहीं था अथवा फिल्में मुक हुआ करती थी फिर समय के साथ–साथ फिल्मों को संवाद और फिर श्वेत श्याम से रंगीन फिल्मों का दौर आया ।हम जहां तक सिनेमा और समाज के आपसी संबंधों की बात करें तो यह सिद्ध भी हो चुका है कि समाज और सिनेमा एक दूसरे को प्रभावित करते हैं। अथवा यह कहे की सिनेमा समाज का आईना है तो कोई अतिशयोक्ति नहीं होगी । समय के अनुसार फिल्मों के विषयो में बदलाव आता रहा लगभग हर एक दशक में फिल्मों के विषय बदलते रहे हैं और सिनेमा तेजी से बदलते समाज को दर्शाता है। यदि हम फिल्मों के विषयो की बात करें तो पौराणिक कथाओं से लेकर प्रेम प्रसंग, ऐतिहासिक, मसाला–हास्य और विभिन्न सामाजिक विषयों पर फिल्में बनती रही है । किन्तु वर्तमान मे हम एक जैसे विषय की चर्चा करेंगे । जिस पर बहुत कम फिल्में बनी है और इस विषय पर समाज भी अपनी सोच अभी रूढ़िवादी बनाए हुए हैं। वर्तमान शोध में हम समलैंगिकता विषय पर बनी कुछ फिल्मों पर चर्चा करेंगे। ये फिल्में महिलाओं के समलैंगिक और पुरुषों के समलैंगिक रिश्तों पर बनी हैं,इन फिल्मों के प्रदर्शन के समय बहुत से विवाद भी उत्पन्न हुए और फिल्म आलोचकों के द्वारा इन फिल्मों की सराहना भी की गई है।

मूल शब्द –समलैंगिकता , मुक , संवाद, रूढ़िवादी, पारंपरिक लोक माध्यम।

परिचय–इस लेख में हम समलैंगिकता पर बनी कुछ फिल्मों की चर्चा करेंगे जो अलग–अलग समय पर बनी जिसमें दायरा, फायर, अलीगढ़, माई ब्रदर निखिल, बाम्बे टाकिज, शुभ मंगल ज्यादा सावधान, आई एम, कपूर एंड संस प्रमुख है

समलैंगिकता– इसका अर्थ है किसी व्यक्ति का एक समान लिंग वाले लोगों के प्रति यौन एवं रोमांस रूप से आकर्षित होना इसमें पुरुष जो पुरुषों के प्रति आकर्षित होते हैं उन्हें समलिंगी या गे कहा जाता है। वहीं महिला किसी महिला के प्रति आकर्षित होती है या संबंध बनाती है तो उसे महिला समलिंगी या लेस्बियन कहा जाता है इसके अतिरिक्त जो लोग महिला और पुरुषों के प्रति आकर्षित होते हैं उन्हें उभयलिंगी कहा जाता है अथवा समलैंगिकता शब्द उन लोगों के लिए प्रयुक्त होता है जो रोमांस रूप से समान लिंग के लोगों के प्रति आकर्षित होते हैं।प्राचीन संस्कृतियों में भी समलैंगिकता के प्रमाण तो प्राचीन चित्र कार्यों से मिलते हैं, जिनमें पुरूष आपस में यौन संबंध बनाए हुए दिखाई देते हैं वर्तमान में समलैंगिकों के लिए ***एल जी बी टी*** समुदाय का नाम प्रयोग में लिया जाता है और इसके अतिरिक्त समलैंगिक पुरुषों ***क्वीर*** शब्द का प्रयोग किया जाता है तो समलिंगी महिलाओं के लिए ***लेस्बियन*** शब्द के साथ साथ ***डाइक*** शब्द का प्रयोग किया जाता है।

समलैंगिक यौन गतिविधियों को मान्यता देने वाले देश –विश्व में लगभ–25 के आस पास ऐसे देश हैं जहाँ समलैंगिकों को विवाह करने व संबंध बनाने की अनुमति हैजिनमें नीदरलैंड्स नार्वे बेल्जियम स्पेन दक्षिण अफ्रीका ताइवान ब्राज़ील अर्जेंटीना और कोलंबिया अमेरिका फ्रान्स आयरलैंड पुर्तगाल डेनमार्क जर्मनी माल्टा न्यूज़ीलैंड यूनाइटेड किंगडम यूनाइटेड किंगडम मैक्सिको स्वीडन फिनलैंड और कनाडा प्रमुख हैं इनमें नीदरलैंड्स पहला ऐसा देश बना जिसने 2001 में समलैंगिकता को मान्यता प्रदान की जर्मनी ने माल्टा और भारत अंतिम देश है जहाँ 2017–18 को इसे मान्यता प्रदान की| भारत में भी कई हिस्सों में समलैंगिक रिश्तों की भी ख़बरें आती रही है भारत के छत्तीसगढ़ में पहली समलैंगिक शादी सरगुणा जिला अस्पताल की नर्स ***तनूजा चौहान*** और ***जया वर्मा*** ने की। इसे 27 मार्च 2001 को दोनों ने

वैदिक रीति रिवाज़ से विवाह किया था भारत में देश की सर्वोच्च अदालत में 2018 आई.पी.सी.की धारा 377 को क़ानूनी वैधता प्रदान की।अब आपसी सहमति से दो समलिंगी लोगों के बीच बने संबंध अपराधिक कृत्य नहीं माने जाएंगे।

समलैंगिकता पर हमारी सोच– हमारा समाज रूढ़िवादी सोच सकता है इस सोच को बदलने में अभी और समय लगेगा।आज हमारे समाज में लड़के –लड़की के संबंधों को सामाजिक मान्यता देता है किंतु लड़का किसी लड़के की ओर आकर्षित होता है या फिर महिला किसी महिला के प्रति आकर्षित होती है या यौन क्रिया करती है तो समाज से उन्हें सम्मान की दृष्टि से नहीं देखता। हमारे समाज में एक अवधारणा है कि लड़का लड़का आपस में अच्छे दोस्त हो सकते हैं इसमें उन्हें कोई आपत्ति नहीं है किन्तु इनके बीच आपसी प्रेम–संबंध या यौन क्रिया होती है तो समाज उन्हें अपमानित सा करता है।अतः यह हमारी कुंठा को दर्शाता है इसके अतिरिक्त ऐसे रिश्तों को धर्म के विरुद्ध प्राकृतिक और मानसिक बीमारी तक क़रार कर दिया जाता है।

क़ानून के साथ साथ समाज समाज का नजरिया –दुनिया के कई देशों तरह भारत के सर्वोच्च न्यायालय ने भी अपने फ़ैसले में यह स्पष्ट कर दिया की समलैंगिकता व्यक्ति के मौलिक अधिकारों जैसा है।संवैधानिक पीठ ने माना है कि समलैंगिकता अपराध नहीं है और इससे लेकर लोगों को अपनी सोच बदलने की आवश्यकता है शीर्ष न्यायालय के इस फ़ैसले को आए इतना समय बीत जाने के बाद भी समाज ने समलैंगिकता के प्रति अपना नजरिया अब तक ना के बराबर बदला है।आज भी माता पिता को जब यह पता चलता है कि उनका बच्चा है समलैंगिक है तो वे इसे कलंक मानते हैं किन्तु आज समय आ गया है जब समलैंगिकता के प्रति अपनी सोच बदलने की आवश्यकता है और इनको भी हमें सम्मान की दृष्टि से देखने की ज़रूरत है।

फिल्म समीक्षा–

दायरा (1996)-फ़िल्म का निर्देशन अमोल पालेकर ने किया फ़िल्म की कहानी लीक से हटकर है।फ़िल्म की कहानी में एक थियेटर कलाकार और गाँव की लड़की के जीवन के संघर्ष को प्रदर्शित करती है फ़िल्म में मुख्य भूमिका में निर्मल पांडे और सोनाली कुलकर्णी है फ़िल्म क्रोस ड्रेसिंग के प्रति समाज की सोच को चित्रित करती है फ़िल्म आलोचकों ने फ़िल्म की बहूत सराहना की।

फ़ायर (1996)- इस फ़िल्म में हिंदी सिनेमा में पहली बार समलैंगिक रिश्तों को दिखाया गया था।दीपा मेहता द्वारा निर्देशित फ़िल्म में लेस्बियन रिश्तों को चित्रित किया गया था फ़िल्म में मुख्य भूमिका में शबाना आज़मी नंदिता दास हैं। फ़िल्म के प्रदर्शन के दौरान फ़िल्म को बहूत सी आलोचनाओं का सामना करना पड़ा था। फ़िल्म में जेठानी और देवरानी के आपसी प्रेम –संबंधों और यौन क्रियाओं को चित्रित किया गया है फ़िल्म में दिखाया गया है कि दोनों एक दूसरे के प्रति किन कारणों से आकर्षित होती है।इस फ़िल्म के निर्देशन के बाद दीपा मेहता ने अर्थऔर वॉटर फ़िल्म में भी निर्मित की है ।

अलीगढ़– (2016) अलीगढ़ सच्ची घटना पर आधारित फ़िल्म है जिसमें पुरुषों के आपसी रिश्तों की कहानी है अलीगढ़ मुस्लिम विश्वविद्यालय के एक ***गे प्रोफ़ेसर रामचंद्र सिरस*** और एक लड़के की है,जिसके साथ उसके यौन संबंध थे। जिनके यौन संबंधों का वीडियो वायरल हो जाता है। इस फ़िल्म का निर्देशन हंसल मेहता ने किया फ़िल्म में मुख्य भूमिका मनोज वाजपेयी ने अदा की फ़िल्म का प्रदर्शन 2016में हुआ।फ़िल्म बहूत ही अच्छी बनी थी फ़िल्म के माध्यम से लोगों की रूढ़िवादी सोच का बाखूबी प्रदर्शन किया गया है।

कपूर एंड संस (2012) फ़िल्म का निर्देशन शकुन बत्रा और निर्माण करण जौहर ने किया था। फ़िल्म में वैसे तो पारिवारिक रिश्तों दर्शाया गया है।फ़िल्म में ऋषि कपूर ,रजत कपूर,फवाद ख़ान और अर्जुन के साथ रत्ना पाठक मुख्य भूमिका में थे।फ़िल्म की कहानी में परिवार का सबसे बड़ा बेटा फवाद ख़ान जो एक ***गे*** है ।फ़िल्म में रूढ़िवादी सोच को न दिखाते हुए उसके जीवन की सच्चाई को चित्रित किया गया है फ़िल्म के माध्यम से दर्शाया गया है कि समलैंगिक होना कोई अपराध नहीं है अथवा इस फ़िल्म के माध्यम से समलैंगिक रिश्तों के प्रति अपनी सोच को बदलने वह परिवार के द्वारा उनका सहयोग करने को बहूत अच्छे ढंग से चित्रित किया गया है।

आई ऐम (2010) – यह फिल्म समलैंगिक रिश्तो पर बनी थी । यह पहली ऐसी फिल्म थी जिसे राष्ट्रीय पुरस्कार दिया गया था। इस फिल्म में चार अलग–अलग कहानियों को दिखाया गया है जो सभी वास्तविक जीवन पर आधारित घटनाओं पर बनी है इस जिसमें ओमर में कहानी में गे अधिकारों को चित्रित किया गया है।फिल्म का निर्देशन ओनीर और उर्मी जुविकर ने किया था। फिल्म का निर्माता संजय सूरी था। फिल्म में जूही चावला,मनीषा कोइराला ,राहुल बोस, नंदिता दास, अर्जुन माथुर ,संजय सूरी अनुराग बसु आदि ने निभाई। 2010 में प्रदर्शित हुई यह फिल्म 110 मिनट की थी।

मुंबई टॉकीज (2013) यह फिल्म चार अलग–अलग कहानियों पर आधारित थी। फिल्म का निर्देशन करण जोहर, अनुराग कश्यप, जोया अख्तर और दिबाकर बनर्जी ने किया इस फिल्म की कहानी गे कपल पर आधारित थी। जिस भूमिका को रणदीप हुड्डा और शकीब सलीम ने निभाया था।इस फिल्म में दोनों के लिप लॉक दृश्य बहुत ज्यादा चर्चा में रहे फिल्म में रानी मुखर्जी और नवाज़ुद्दीन सिद्धकी की अदाकारी बहुत उम्दा थी।

शुभ मंगल ज्यादा सावधान (2020)–फ़िल्म की कहानी में कार्तिक (आयुष्मान खुराना) व अमन (जितेंद्र कुमार) की है दोनों प्यार में हैं और दिल्ली में साथ रहते हैं। मुश्किलें तब शुरू होती हैं, जब कार्तिक के चाचा (मनु ऋषि चड्ढा) की बेटी गॉगल (मानवी गागरू) की शादी में शिरकत करने ये दोनों इलाहाबाद जाते हैं और वहां इनके समलैंगिक संबंध का राज सबके सामने आ जाता है। अमन के पिता शंकर त्रिपाठी (गजराज राव) और मां सुनयना त्रिपाठी (नीना गुप्ता) सहित पूरे परिवार को यह बात जानकर झटका लगता है। अब अमन और कार्तिक के सामने चुनौती है कि वे सबको अपने रिश्ते को स्वीकारने के लिए मनाएं...हितेश केवल्य ने इस फिल्म की

कहानी लिखी है व निर्देशन भी किया है और निर्देशन व लेखन, दोनों में वह ठीक रहे हैं। फिल्म सधे हुए तरीके से शुरू होती है। और अपने संदेश को दर्शकों तक पहुंचाने में कामयाब रहती है।

निष्कर्ष– समलैंगिकता अब क़ानूनी रूप से अपराध नहीं है भारत के सर्वोच्च न्यायालय ने IPC की धारा 377को रद्द कर दिया है शीर्ष न्यायालय के इस फ़ैसले से समलैंगिक समुदाय के लोगों में अब कहीं न कहीं सकून है। सुप्रीम कोर्ट और लोगों को भले ही यह समझने में समय लगा हो किन्तु भारतीय हिन्दी समय सिनेमा ने समलैंगिकों के इस दुनिया को सबके सामने लाने का प्रयास किया है।इस बात के लिए समाज ने इन फ़िल्मों का बहिष्कार का विरोध भी किया है किन्तु फिर भी इन फ़िल्मों ने समाज के लोगों को इन समलैंगिक रिश्तों के प्रति जागरूक करने में अपनी अहम भूमिका निभायी है। उपरोक्त चर्चा में हमने लगभग भारतीय हिंदी सिनेमा की साथ फ़िल्मों पर चर्चा की ये सभी फ़िल्में समलैंगिक रिश्तों को लेकर बनी इन फ़िल्मों के माध्यम से समाज के लोगों की समस्याओं को और उन कारणों का प्रदर्शन किया गया है। इसके अतिरिक्त इन फ़िल्मों के माध्यम से समाज के लोगों को समलैंगिकता पर अपने रुढ़िवादी विचार बदलने की आवश्यकता पर ज़ोर दिया गया है।

संदर्भ सूची :

- https://indianexpress.com/article/entertainment/bollywood/ayushmann-khurrana-shubh-mangal-zyada-saavdhan-homosexuality 5718578.
- https://hindi.webdunia.com/bollywood-movie-review/kapoor-sons-siddharth-malhotra-alia-bhatt-fawad-khan-samay-tamrakar-116031800034_1.html.
- https://en.wikipedia.org/wiki/Fire_(1996_film).
- https://en.wikipedia.org/wiki/Bombay_Talkies_(film)
- https://www.ibtimes.co.in/bombay-talkies-critics-review-a-powerful-tribute-to-indian-cinema-464192